उपन्यास त्यागपत्र (1937) ई० बी०ए०- द्वितीय सेमेस्टर

जैनेन्द्र

PAGE No
DATE

शैली — आत्मकथात्मक

मुख्य कथा — अनमेल विवाह के दुष्परिणाम की कहानी

मुख्य पात्र — मृणाल, प्रमोद (मृणाल का भतीजा)

गौण पात्र — मृणाल के भाई भाभी, पति, कोयले वाला

भतीजा

'त्यागपत्र' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, यह नायिका प्रधान व आत्मकथात्मक उपन्यास है, इसमें नारी जीवन संबंधी समस्याओं को दिखाया गया है।

PAGE NO:
DATE: / /

त्यागपत्र उपन्यास की तात्विक समीक्षा →

1) कथानक (कथावस्तु)

2) चरित्र चित्रण — पात्र → मृणाल, प्रमोद एम दयाल, शीला, कोयले वाला, भैय्या व भाभी, पति राजनंदिनी व पिता (राजनंदिनी)

3) कथोपकथन या संवाद

4) देशकाल या वातावरण (1937 में प्रकाशन, स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व)

5) भाषा शैली → सहज, खड़ी बोली, व तद्भव शब्दों का प्रयोग) अभिधा व्यंजना व लक्षणा सभी शक्तियों का प्रयोग, प्रसाद गुण से ओत-प्रोत

6) उद्देश्य →

नारी जीवन की त्रासदी का वर्णन करना मुख्य उद्देश्य है, रूढ़िवादी समाज में नारी किस प्रकार से पीड़ा से ग्रसित है, नारी किस प्रकार से समाज में अभिशप्त है प्रमोद अपने जीवन की सार्थकता अपने पद और पैसे से खोजता है पर उसे शीघ्र ही जीवन की वास्तविकता को स्वीकार कर अपने पद से त्यागपत्र देकर हरिद्वार चला जाता है, और साधु के वस्त्र धारण कर बाकि का जीवन वहीं पर बिताता है, इसमें धन, दौलत, पद, मान सब सतही बातें हैं वास्तविक जीवन का सुख भौतिक नहीं वरन् मानसिक व आध्यात्मिक सुख है।

[एम० दयाल जज (प्रमोद)

Scanned with CamScanner

मृणाल के चरित्र की विशेषताएँ

1) सौन्दर्य की प्रतिमा
2) चंचल व कल्पनाशील स्वभाव
3) स्त्री धर्म में विश्वास
4) संघर्षशील नारी
5) स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता
6) स्वाभिमानी स्त्री
7) प्रगतिशील विचारधारा से युक्त
8) जीवन के प्रति सार्थक दृष्टिकोण

प्रश्न → प्रमोद की चारित्रिक विशेषतायें →

① अध्ययनशील विद्यार्थी
② भावुक व्यक्तित्व
③ अत्यन्त संवेदनशील व्यक्तित्व
④ मानवीय मूल्य एवं चिन्तनशील व्यक्तित्व

प्रश्न ⟹ त्यागपत्र उपन्यास का उद्देश्य लिखिये →

1) नारी की पीड़ा का वर्णन
2) नारी की मनोदशा का चित्रण
3) नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण
4) धार्मिक रूढ़िवादिता का दर्शन
5) सकारात्मक जीवन जीने का जज्बा
6) नारी की पवित्रता पर सवाल
7) बाह्य आडम्बरो का दोषारोपण

Scanned with CamScanner

प्रश्न :- कहानी के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा कीजिए ?

उत्तर :- कहानी - कला के तत्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी की समीक्षा निम्न प्रकार की जा सकती है :-

(1) कथानक :- इस कहानी का कथानक संक्षिप्त है किन्तु एक उपन्यास की सामग्री समेटे हुए है। अमृतसर के बाजार में एक सिक्ख लड़का और लड़की एक दुकान पर मिलते है। लड़का लड़की से उसकी कुड़माई (सगाई) के विषय में पूछता है। लड़की 'धत' कहकर चली जाती है। प्रतिदिन यही क्रम चलता है। एक दिन लड़की उससे कह देती है की उसकी कुड़माई (सगाई) हो गई। लड़के का नाम लहनासिंह है। वही इस कहानी का नायक है। लड़की का विवाह सूबेदार हजारासिंह से हो गया। वह सूबेदारनी कहलाती है। जिस फौज में हजारासिंह था, उसी में लखनासिंह जमादार बन जाता है। लड़ाई में जाते समय जब लखनासिंह सूबेदार हजारासिंह के घर जाता है, तब सूबेदारनी उससे अपने लड़के बाघासिंह की रक्षा के लिए कहती है। यही वचन है, जो 'उसने कहा था' लखनासिंह अपनी जान देकर भी उस वचन

का पालन करता है, जो उसने सूबेदारनी को दिया था। कहानी का कथानक बड़ा ही सुन्दर है।

(2) पात्र एवं चरित्र-चित्रण ÷ कहानी में पात्रों की संख्या बहुत कम है- लहनासिंह, सूबेदारनी, हजारासिंह, बोधासिंह। मुख्य पात्र लहनासिंह और सूबेदारनी है। कहानी के आरम्भ में जब किशोर लहनासिंह एक किशोरी से बात करता है तब उच्छृंखल प्रवृत्ति का मालूम पड़ता है। किन्तु ज्यों-2 कहानी आगे बढ़ती है। उसके चरित्र का विकास होता जाता है। कहानी के अन्त: में युद्ध की घटना से मालूम होता है कि वह एक निःस्वार्थ सेवी और अपने वचन का पालन करने वाला है। यह आदर्श प्रेमी भी है, लेकिन उसके प्रेम में वासना की गन्ध नहीं है। गुलेरीजी ने कहानी के सभी पात्रों का चरित्र-चित्रण स्वाभाविक रीति से किया है।

(3) देशकाल और वातावरण ÷ गुलेरीजी ने स्थान, समय और परिस्थिति का बड़ा सुन्दर समन्वय किया है। अमृतसर का बाजार और जर्मन की लड़ाई का दृश्य देखते ही हम अपने को उस देश, उसी काल और उसी

परिस्थिति में अनुभव करने लगते हैं। इस कहानी में देश, काल और परिस्थितियों का जो संकलन किया गया है, उससे ऐतिहासिक और सच्ची मालूम होती है। कहानी के प्रारम्भिक भाग के काल में और अन्त में दिए गए काल में 25 वर्षों का अन्तर है, किन्तु गुलेरीजी ने इस अन्तर को बड़ी कुशलता को समन्वित कर दिया है।

कथोपकथन :- इस कहानी में पात्रों की बातचीत पात्रों के अनुकूल है। कथोपकथन छोटे होने से उनमें स्वाभाविकता है, अमृतसर के बाजार में जब किशोर और किशोरी मिलते हैं, तब उनकी बातचीत वैसी ही होती है जैसी प्रायः हुआ करती है। यथा -

"तेरा घर कहाँ है ?"
"मगरे में - और तेरा ?"
"माझे में - यहाँ कहाँ रहती है ?"
"अतर सिंह की बैठक में, वे मेरे मामा हैं।"
"मैं भी मामा के यहाँ आया हूँ, उनका घर गुरु बाजार में है।"

संवाद, प्रसंग, व पात्रानुकूल हैं। वे खड़ी बोली में है और पंजाबी में भी।

भाषा - शैली :- इस कहानी की भाषा सरल तथा सरस है। ऐसे शब्दों का प्रयोग

Scanned with CamScanner

नहीं किया गया है जो अप्रचलित है। कहानी की भाषा पात्रों के अनुकूल है। पंजाबी पात्रों की भाषा में पंजाबी की शब्दावली का प्रयोग किया गया है। निमोनिया, लेफ्टीनेण्ट, फुट, फायर, डायरी, रेजीमेण्ट आदि अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग सहज रूप में हुआ है। लोकोक्ति - बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही द्रष्टव्य है।

सम्पूर्ण कहानी वर्णनात्मक शैली में लिखी गई है। कहानी की शैली इतनी सुन्दर है कि यह कहानी हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में गिनी जाती है। कहानी के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध भागों, जो अलग-2 प्रतीत होते हैं, लेखक ने इस कुशलता के साथ मिलाया है कि पाठक चकित हो जाता है।

(6) शीर्षक ÷ कहानी का शीर्षक 'उसने कहा था' पाठक के हृदय में उत्सुकता जागृत कर देता है। पाठक इस जिज्ञासा के कारण कहानी पढ़ने के लिए आतुर हो उठता है कि किसने कहा था? क्या कहा था? इसका शीर्षक ही कहानी की श्रेष्ठता सिद्ध करता है।

(7) उद्देश्य ÷ पवित्र प्रेम और कर्त्तव्यपालन दिखलाना ही कहानी का उद्देश्य है, लखनसिंह

Scanned with CamScanner

के जीवन में हमें शिक्षा मिलती है कि कर्तव्य पालन के लिए प्राणों की भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

आलोच्य कहानी 'उसने कहा था' का प्रारम्भ उत्सुकतावर्धक है। लेखक ने कहानी के आदि और अन्त का सुन्दर समन्वय किया है। कहानी के प्रारम्भ में उत्पन्न हुई जिज्ञासा अन्त में शान्त हो जाती है। इस प्रकार गुलेरी जी की कहानी सबको मनोहर लगती है। इसमें पाठकों को उपन्यास जैसा आनन्द मिलता है।

हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित कहानियों में से कहानी-कला और मूल संवेदना की अभिव्यक्ति की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कहानी है— 'उसने कहा था'। एक सर्वोत्तम आलोच्य कहानी में प्रेम, त्याग और बलिदान का चित्रण इतना प्रभावशाली है कि हिन्दी कहानी की विकास यात्रा के प्रथम चरण की होकर भी यह आज भी उतनी ही लोकप्रिय है। वस्तुतः यह कहानी हिन्दी कथा साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है। गुलेरी जी की यह कहानी अपने नवीन शिल्प, कलात्मक उत्कृष्टता और मानवीय गुणों की गहन संवेदना के कारण अपने समय में ही श्रेष्ठ नहीं समझी गई, बल्कि आज भी अप्रतिम है।

01/08/2023 — उत्तम कार्य

Scanned with CamScanner

बी०ए० - द्वितीय
सत्रार्ध

उसने कहा था

(चन्द्रधर शर्मा गुलेरी)

PAGE NO :
DATE : / /

लहनासिंह का चरित्र चित्रण

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी उसने कहा था पवित्र, वासना निर्मल और सच्चे प्रेम पर आधारित है, गुलेरी जी ने इस में जिस प्रेम को प्रस्तुत किया है, वह आदर्श प्रेम है, इस प्रेम को प्रस्तुत करने वाला और इसका निर्वाह करने वाला प्रमुख पात्र लहनासिंह है,

1. सच्चा प्रेम →
2. साहसी → वह फौज में जमादार के पद पर प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मन सेना के विरुद्ध लड़ रहा था,
3. कष्ट सहने की क्षमता →
4. प्रत्युत्पन्न मति / समय की नजाकत को पहचानना →
5. कर्तव्य निश्चय करने में विलम्ब नहीं →
6. अपना महत्व समझने वाला → लहना सिंह अपने सिख सिपाही होने का भाव प्रदर्शित करते हुए कहा— "आठ नहीं दस लाख, एक-एक अकालिया सिक्ख सवा लाख के बराबर होता है,

Scanned with CamScanner

नमक का दरोगा

(मुंशी प्रेमचन्द)

इस कहानी का नायक वंशीधर एक ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति है, जब वह नौकरी की तलाश में निकलता है, तो पिता उसे समझाते हैं कि — 'नौकरी ~~में~~ में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है, निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो, मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखायी देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है, ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है, वेतन मनुष्य देता है इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती, ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है इसी से उसकी बरकत होता है, तुम स्वयं विद्वान हो तुम्हें क्या समझाऊँ, परन्तु वंशीधर नमक के दरोगा का पद जिसमें ऊपरी आमदनी की खूब गुंजाइश है पाकर भी ईमानदारी से नौकरी करता है, नौकरी मिलने के कुछ समय बाद वंशीधर दातागंज के सबसे प्रभावशाली, धनवान, भ्रष्ट, राजनीतिक पकड़वाले पंडित अलोपीदीन की नमक की गाड़ियाँ को पकड़ लेता है, जिन्हें टैक्स की चोरी करते हुए कानपुर ले जाया जा रहा है, अलोपीदीन की खुद को बचाने की तमाम कोशिशे व्यर्थ हो जाती हैं और वंशीधर उन्हें अदालत में गुनहगार के रूप में पेश करते हैं। अदालत में वकील तथा प्रशासनिक अधिकारी अलोपीदीन को निर्दोष सिद्ध करते हैं, परिणामत वंशीधर को नौकरी से बेदखल होना पड़ता है, इसके कुछ दिनों बाद पंडित अलोपीदीन, वंशीधर की ईमानदारी और कर्तव्य-निष्ठा के आगे नतमस्तक हो जाता है, वह वंशीधर से माफी मांगता है और उसे अपने कारोबार में स्थायी मैनेजर बना देता है,

प्रेमचन्द की इस कहानी में आरम्भ से अन्त

Scanned with CamScanner

तक प्रेमचन्द ने बड़े ही रोचक ढंग से हमारे समाज के यथार्थ को हमारे सामने रखा है, इस कहानी के प्रमुख पात्र वंशीधर, वंशीधर के के पिता और अलोपीदीन समाज की किसी-न किसी सच्चाई से हमें रुबरु कराते हैं, इस कहानी की आज भी उतनी ही प्रासंगिकता है, जितनी प्रेमचन्द के समय में थी, आज भी दरोगा वंशीधर जैसे ईमानदार लोगों का हमारे समाज में अभाव है और पंडित अलोपीदीन जैसे भ्रष्ट और बेईमान लोगों की अभी भी बाढ़ है, वृद्ध मुंशी धन को सर्वाधिक महत्व देने वाले भ्रष्ट व्यक्ति हैं, वे अपने बेटे से ऊपरी आमदनी करने के लिए कहते हैं,

इस कहानी का अन्तर पाठकों के लिए कई प्रश्न भी खड़ा करती है, क्या पंडित अलोपीदीन जैसे बेईमान व्यक्ति के यहाँ नौकरी स्वीकार करना वंशीधर की मजबूरी है? अथवा अलोपीदीन ने ईमानदारी की कद्र करने के लिए वंशीधर को अपने कारोबार का स्थाई मैनेजर बनाया? या अलोपीदीन को अपने काले कारोबार के लिए ईमानदार मैनेजर की जरुरत है? अर्थात् वंशीधर जैसे लोग हमारी प्रशासनिक, सामाजिक व्यवस्था से थककर मजबूरन बेईमान लोगों की शरण में चले जाते हैं या ईमानदारी की कद्र सर्वत्र होती है? इन प्रश्नों के उत्तर प्रेमचन्द ने पाठकों के लिए छोड़ दिये हैं, बहरहाल यह कहानी जीवन के ऐसे वस्तुसत्य को व्यक्त करती है जिसे आज भी हमारे समाज में ज्यों का त्यों घटित होते हुए देखा जा सकता है, कथावस्तु, चरित्र चित्रण, संवेदना, कथोपकथन आदि की दृष्टि से प्रेमचन्द की यह कहानी एक श्रेष्ठ कहानी है,

Scanned with CamScanner